कविग्राम

वर्ष 3, अंक 7, अगस्त 2022

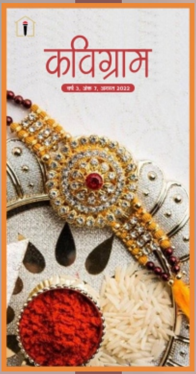

आवरण सज्जा : चिराग़ जैन

कविग्राम

वर्ष 3, अंक 7, अगस्त 2022

परामर्श मण्डल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

सम्पादक
चिराग़ जैन

सह सम्पादक
मनीषा शुक्ला

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

प्रकाशक
कविग्राम फाउण्डेशन

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।
कविग्राम में प्रकाशित लेख तथा कविताओं में व्यक्त विचार उनके रचयिताओं की निजी राय है।

मूल्य : निःशुल्क

kavigram.com
TheKavigram@gmail.com
kavigramfoundation
facebook.com/kavigram
youtube.com/c/KaviGram
8090904560
thekavigram
thekavigram

यह पत्रिका प्रतिमाह निःशुल्क प्राप्त करने के लिए कृपया हमें 8090904560 पर अपना नाम, व्हाट्सएप नम्बर, जन्मतिथि, पिनकोड तथा ईमेल आई डी लिखकर भेजें।

भीतर के पृष्ठों पर

सम्पादकीय / एक ख़ामोश संवेदना / चिराग़ जैन / 04
आवरण कथा / भाई-बहन का रिश्ता फिल्मी झरोखा / सुनील व्यास / 07
वटवृक्ष / राखी बांधत जसोदा मैया / सूरदास / 12
वटवृक्ष / भाई-बहन / गोपालसिंह नेपाली / 13
गुलमोहर / हुमायूँ की राखी / पंडित नरेन्द्र मिश्र / 14
गुलमोहर / हम-तुम / कुँअर बेचैन / 17
गुलमोहर / अधूरा अभंग / डॉ. अनामिका / 18
गुलमोहर / बहन का पत्र / नचिकेता / 20
फुलवारी / मेरी गुड़िया / अनिल अभिषेक / 21
फुलवारी / बहना मायके आना / धर्मेन्द्र सोलंकी / 22
फुलवारी / बहन की विदाई / संजीव शशि / 23
फुलवारी / राखी पकड़ बहन रोयेगी / अभिषेक औदिच्य / 24
बालगीत / रक्षाबन्धन / डॉ. कीर्ति काले / 25
ग़ालिब की गली / बहन से वायदा / प्रगीत कुँअर / 26
संस्मरण / एक मीठी याद / संध्या यादव / 27
रेखाचित्र / नैहर की पाती / शैलजा पाठक / 29
धारदार / राखी आयी रे / हिमांशु बवंडर / 31
कविता / बहनें और रास्ते / प्रेमरंजन अनिमेष / 34
कवि-सम्मेलन संग्रहालय / 1982 का पत्रक / 35
कवितैव कुटुम्बकम / पुस्पक चीलगाड़ी और पुष्पक / प्रो. अशोक चक्रधर / 36
सम्पादक की पाती / 42

कवि-सम्मेलनों के उन्नयन, शोध तथा आकादमिक महत्त्व को प्रतिष्ठापित करने के लिए कविग्राम अनवरत प्रयासरत है। कविग्राम डिजिटल मासिक पत्रिका प्रतिमाह लगभग 15000 लोगों तक निःशुल्क पहुँचाई जाती है। आप यह पत्रिका अपने सम्पर्कों तक प्रसारित करके कविग्राम का सहयोग कर सकते हैं। यदि आप कविग्राम का कोई आर्थिक सहयोग करना चाहें तो निम्नलिखित बैंक खाते में स्वेच्छानुसार राशि जमा करके रसीद 8090904560 पर प्रेषित करें। (80जी तथा 12ए पंजीकृत)

Account Name : KAVIGRAM FOUNDATION
Account No : 921020054988086 / IFSC : UTIB0004672
PAN : AAETK6435B

एक ख़ामोश संवेदना

माँ के बाद जिस स्त्री के साथ हम सबसे अधिक बचपन जीते हैं, वह हमारी बहन होती है। तुतलाहट, खिलौने, शरारत, किताबें, प्रतियोगिता, संवेदना, प्रेम, गृहस्थी तथा व्यस्तता जैसे प्रत्येक सोपान पर जो हमें अपने समानांतर खड़ी मिलती है, वह हमारी बहन होती है।

कविग्राम का यह अंक तैयार करते समय मुझे महसूस हुआ कि कुछ अर्थों में 'बहन' का रिश्ता 'माँ' के रिश्ते से भी अधिक निस्पृह सिद्ध होता है, क्योंकि इस रिश्ते को कविताओं के माध्यम से आभार व्यक्त करना भी हमें कभी आवश्यक नहीं लगा। परिवार की याद पर कोई कविता लिखते हुए यदि किसी अंतरे में बहन को भी याद कर लिया तो इसे हमारे कवियों की कृपा जानो।

यहाँ तक कि पौराणिक साहित्य में भी इस रिश्ते की संवेदना को मुखर करना कदाचित् आवश्यक नहीं समझा गया। रामकथा में बहन आई तो शूर्पनखा के रूप में। और यह पात्र जिस स्थिति में कथा का हिस्सा बना है, उस स्थिति को संवेदना की जननी तो दूर, घृणा और वैभत्स्य से बचाना तक असंभव जान पड़ता है। रावण की माता केकसी भी अपने भाइयों के लिए रक्ष संस्कृति की रक्षार्थ प्रतिशोध की कथा का पहला अध्याय बनाकर विश्रवा ऋषि के पास भेज दी गयी। यहाँ भी बहन-भाई के प्रेम के स्थान पर अन्यान्य शत्रुओं से प्रतिशोध ही महत्वपूर्ण था।

इसी प्रकार हिरण्यकश्यप की कथा में भी बहन होलिका एक बालक की हत्या के प्रयास में सम्मिलित मिलती है, और स्नेह की नहीं अपितु धिक्कार की पात्र सिद्ध होती है।

महाभारत में कंस-देवकी का सम्बन्ध भी भाई-बहन के रिश्ते को स्नेह की सुगंध से नहीं, अपितु द्वेष की सड़ांध से भरकर वीभत्स

बनाता प्रतीत होता है। श्री कृष्ण की बहन सुभद्रा अवश्य एक लाड़ली भगिनी के रूप में प्रकट होती है, लेकिन इस मीठे सम्बन्ध को व्याख्यायित करने में कथाकार की कोई ख़ास रुचि नहीं दिखाई देती। विराटनगर की रानी सुदेषणा और उसका भाई कीचक भी भाई-बहन के रिश्ते की स्नेहसिक्त कथा कह सकते थे, लेकिन कथाकार ने इस रिश्ते में भी बहन को भाई की अनैतिक कामपिपासा को पूर्ण करने का माध्यम बनाकर छोड़ दिया।

उधर द्रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न महाभारत रण में पाण्डव दल के सेनापति जैसा महत्वपूर्ण पद निर्वाह कर रहे थे, लेकिन उनकी वरीयता सूची में भी अपनी बहन द्रौपदी के अपमान से अधिक महत्वपूर्ण अपने पिता का अपमान का प्रतिशोध ही था।

लगभग सभी धर्मों ने भाईचारा बढ़ाने के लिए सभी को भाई मानने की सीख दी है। लगभग सभी समाजों ने पराई स्त्री को माता या बहन मानने के प्रवचन दिये हैं, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से भाई-बहन के रिश्ते को प्रगाढ़ करने के लिए कहीं कोई विशेष प्रयास दिखाई नहीं देता।

पितृसत्तात्मक समाजों में स्त्री को किसी भी कथा का अंश तब तक नहीं बनाया गया जब तक उसका होना अपरिहार्य न हो गया हो। माँ के बिना मुख्यपात्र की सर्जना असंभव थी, सो माँ के गुणगान को इग्नोर नहीं किया जा सका। लेकिन बहन की ऐसी कोई अपरिहार्यता अनुभूत न हुई होगी। किसी भी पात्र के बचपन के लिए माँ, यौवन के लिए प्रेमिका अथवा पत्नी, और बुढ़ापे के लिए बेटी की आवश्यकता महसूस हुई तो माँ, पत्नी, प्रेमिका और बेटी पर भर-भर कर साहित्य रच दिया गया। बहन बेचारी, माँ के साथ रसोई में खाना बनाने या फिर भाई की प्रेमिका की सहेली बन जाने से अधिक किसी काम न आ सकी होगी।

फिल्मों में भी बहन या तो नायक की बहादुरी के प्रदर्शन का ग्राउंड बनाने के लिए मवालियों द्वारा छेड़े जाने के काम आई या फिर खलनायक के हाथों बलात्कार की शिकार होकर आत्महत्या की दिशा में स्क्रिप्ट से ओझल हो गई।

कविताओं का कोष खंगाला तो यहाँ भी यह रिश्ता अपने चिरकालीन मौन के साथ यत्र-तत्र बिखरा हुआ ही मिला। यह दीगर बात है कि कथा साहित्य से लेकर काव्य तक जहाँ कहीं इस रिश्ते ने अपना अस्तित्व तलाशा है, वहाँ यह अपनी भरपूर संवेदना तथा महत्ता के साथ प्रकट होने को आतुर दिखाई देता है।

ऐसा नहीं है कि इस बेचैनी को अभिव्यक्ति ¬प्रदान करने के लिए कोई स्थान बना ही नहीं। हमारे लोकगीतों में यह संबंध ख़ूब मुखर हुआ है। अपने भाई से अपने मन की इच्छाएँ कहती बहनें, अपने भाई की वीरता को सराहती बहनें, अपने भाई को 'वीर' कहकर संबोधित करती बहनें, अपने भाई को राखी भेजते हुए पाती लिखती बहनें और अपने भाई को सीख देती बहनें लोकगीतों में ख़ूब चहकती हैं। जब संभ्रांत सृजनलोक में बहन के मन को शब्दाकार होने का स्पेस नहीं मिला तो भात के अवसर पर गाये जाने वाले औगढ़ गीतों में बहनों का मन आकार पा गया। हरियाणवी, ब्रजभाषा, अवधी, मारवाड़ी, मेवाड़ी, बुन्देली और कुमाऊँनी लोकगीतों में भाई-बहन का यह रिश्ता अपने पूर्ण सौष्ठव के साथ उपस्थित है।

इन दिनों वीर रस के कवियों ने शहीद होते सैनिक के मनोभाव को आधार बनाकर जो कविताई की है, उनमें परिवार को याद करते हुए उसे बहन अवश्य याद आई है। ऐसे ही दहेज जैसे विषय पर जो कविताएँ लिखी गई हैं, उनमें ससुराल में पीड़ित बहन को भाई किसी न किसी तरह याद आ ही गया है।

इस अंक को तैयार करते हुए मुझे यह अहसास हुआ है कि जीवन का यह बेहद ज़रूरी रिश्ता जो संवेदनशील सृजनकारों से अनदेखा रह गया है, उसे अभिव्यक्त किया जाना बहुत आवश्यक है। हमने इस अंक में इस विषय पर रची गई कुछ रचनाएँ जुटाने की कोशिश की है, लेकिन इस विषय पर अभी काफी कुछ लिखा जाना शेष है...!

चिराग़ जैन

भाई-बहन का रिश्ता

फिल्मी झरोखा

■ सुनील व्यास

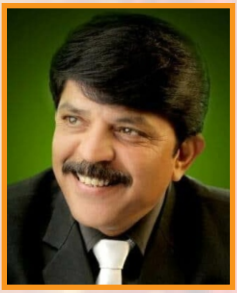

भारतीय सिनेमा का प्रारम्भ जिस भारतीय संवेदना से हुआ, उसमें भारत का सांस्कृतिक दृष्टिकोण, भारतीय पौराणिक साहित्य तथा भारतीय समाज में प्रचलित सम्बन्धों की ख़ुश्बू सम्मिलित है। यही कारण है कि भारतीय जनमानस में व्याप्त दया, करुणा तथा सम्बन्धों के वात्सल्यबोध के समावेश के बिना फिल्म बनाने की कल्पना कम से कम प्रारम्भिक फिल्मकार तो नहीं ही कर पाते थे।

प्रेमी-प्रेमिका और पति-पत्नी के संबंधों पर केन्द्रित होने से पूर्व भारतीय सिनेमा माँ, बेटी, पिता, पुत्र, दोस्त, बहन-भाई और भक्त-भगवान जैसे सम्बन्धों की परिधि पर घूर्णन करता था।

बहन-भाई के सम्बन्ध पर आधारित हिन्दी फिल्मी गीत बहन की विदाई और राखी के त्यौहार तक अलग-अलग तरीके से लिखे गए। वर्ष 1941 में सोहराब मोदी निर्देशित तथा पृथ्वीराज कपूर अभिनीत फिल्म 'सिकन्दर' में पहली बार रक्षाबन्धन के पर्व को पर्दे पर फिल्माया गया था। मीना शोरी पर एक गीत 'अजब है ये जीवन की डोर रे' इस फिल्म की रिलीज़ के समय प्रसारित हुआ लेकिन दो सप्ताह बाद इस गीत को फिल्म से हटा दिया गया।

वर्ष 1945 में महबूब ख़ान की फिल्म 'हुमायूँ' रिलीज़ हुई। अशोक कुमार (हुमायूँ) और वीना (कर्णावती) जैसे कलाकारों से सजे इस चित्रपट में रक्षाबन्धन के दृश्य थे किन्तु राखी पर आधारित कोई गीत नहीं था।

वर्ष 1959 में एलवी प्रसाद की फिल्म 'छोटी बहन' में भाई-बहन के रिश्ते को बहुत सलीक़े से सजाया गया। राग झिंझोटी में सजा इस फिल्म के गीत 'भैया मेरे, राखी के बन्धन को निभाना' में नन्दा और बलराज साहनी की बेहतरीन अदायगी से इतना लोकप्रिय हुआ कि

आज भी राखी की बात आने पर इस गीत की धुन स्वतः ही मन में बजने लगती है। शैलेन्द्र की लेखनी से निकला और शंकर-जयकिशन के सुरों से सजा यह गीत हिन्दी फिल्मों में रक्षाबन्धन के गीतों की कहानी में मील का पत्थर बन गया।

वर्ष 1962 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'अनपढ़' में राजा मेहंदी अली ख़ान का एक गीत सम्मिलित था, 'रंग-बिरंगी राखी लेकर आई बहना'। मदन मोहन ने इसका संगीत बनाया और लता मंगेशकर ने इसे स्वर दिया। रील लाइफ से इतर रीयल लाइफ में भी लता जी मदन मोहन जी को राखी बांधती थीं। 'लता सुर गाथा' पुस्तक में यतीन्द्रनाथ मिश्रा ने लता जी के हवाले से लिखा, 'एक बार राखी के दिन मदन मोहन मेरे घर आए थे। उन्होंने कहा, तुम्हें याद है जब हम पहली बार मिले थे। तब हमने आपस में भाई-बहन का गीत भी गाया था, आज राखी है, यह लो मेरी कलाई पर राखी बांधो। आज से तुम मेरी छोटी बहन और मैं तुम्हारा मदन भैया। आज के बाद तुम अपने भाई की हर फिल्म में गाओगी।' मदन मोहन जी ने यह रिश्ता मरने के बाद भी निभाया। इसीलिए जब 'वीर ज़ारा' बनी तो उनके बेटे ने उनकी बंदिश को लता जी गवाया।

रक्षाबन्धन पर आधारित और भी अनेक गीत हैं जिन्होंने हिन्दी फिल्मों में बहन-भाई के रिश्ते की डोर को मज़बूत करने का सफल प्रयास किया है। वर्ष 1969 में 'अंजाना' फिल्म में आनंद बख्शी का लिखा और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के संगीत से सजा गीत 'हम बहनों के लिए मेरा भैया आता है एक दिन साल में' इस रिश्ते की मीठी करुणा को स्वर देता प्रतीत होता है।

इसी तरह वर्ष 1962 प्रदर्शित अशोक कुमार और वहीदा रहमान अभिनीत फिल्म 'राखी' का गीत 'बंधा हुआ एक-एक धागे में भाई-बहन का प्यार, राखी धागों का त्यौहार' समय की आंधी में कहीं ग़ुम हो गया है लेकिन मोहम्मद रफ़ी की मखमली आवाज़ में भाई-बहन के इस रिश्ते की बेहद ख़ूबसूरत तस्वीर उभरती महसूस होती है। संबंधों की नाज़ुक संवेदना को सुरों में पिरोने में माहिर रवि ने इस गीत की धुन बनाई और अनकही पीड़ा को पढ़कर अभिव्यक्त करने में दक्ष राजेन्द्र कृष्णा ने इस गीत को लिखते समय कलेजा निकालकर रख दिया। इस गीत की कुछ पंक्तियाँ इतनी मार्मिक हैं कि पत्थर की आँख से भी आँसू निकालने में सक्षम हैं।

वर्ष 1963 की फिल्म 'बन्दिनी' में एक गीत था 'अब के बरस भेजो भैया को बाबुल'। आशा भोंसले की आवाज़ में इस गीत का फिल्मांकर बिमल रॉय ने इतना स्वाभाविक किया है कि यकायक हर दर्शक को दूर ससुराल में बैठी अपनी बहन की याद ताज़ा हो जाती थी। कहते हैं कि राग पीलू पर आधारित यह गीत जब आशा जी ने गाया तब उनकी ख़ुद की आँखें भीग गई थीं।

इस दौर में भाई-बहन के रिश्ते पर हर वर्ष कोई न कोई नया गीत रिलीज़ होता था। इन गीतों का समाज पर सकारात्मक प्रभाव भी था। ऐसे में वर्ष 1965 में मीना कुमारी, धर्मेन्द्र और राजकुमार की एवरग्रीर क्लासिक फिल्म 'काजल' ने इस रिश्ते की ख़ूबसूरती को नया आयाम देते हुए साहिर लुधियानवी की क़लम से निकला गीत 'मेरे भैया, मेरे चंदा, मेरे अनमोल रतन' रिलीज़ हुआ और इसने भाई-बहन के रिश्तों को और अधिक प्रगाढ़ कर दिया।

वर्ष 1968 में फिल्म 'एक भूल एक फूल' का गीत 'राखी कहती है तुमसे भैया, मेरे भैया रखना लाज बहन की' सुमन कल्याणपुर की आवाज़ में करुणा उंड़ेलता था, लेकिन यह गीत भी समय की गर्त में कहीं ग़ुम हो गया।

वर्ष 1970 में कल्याणजी-आनन्दजी ने "सच्चा-झूठा' फिल्म के लिए चारुलता राग पर आधारित एक गीत 'मेरी प्यारी बहनिया बनेगी दुल्हनिया' ऐसा सजाया कि इस रिश्ते की संवेदना पर से रोते-पीटते गीतों का ठप्पा हट गया और भीगी आँखों से मुस्कुराते होंठों को स्वर देकर किशोर कुमार ने हिन्दी सिनेमा में बहन-भाई के रिश्ते की एक अलग लकीर खींच दी।

वर्ष 1971 में देव आनन्द की सुपरहिट फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' में आनन्द बख़्शी का गीत 'फूलों का तारों का सबका कहना है' आरडी बर्मन के संगीत से चहक कर जब रिलीज़ हुआ तो भाई-बहन के रिश्ते पर बना एक ऐसा गीत बन गया जो हँसी-ख़ुशी के माहौल में भी लोगों की ज़ुबान पर चढ़ने लगा।

वर्ष 1972 में मनोज कुमार की फिल्म 'बेईमान' का गीत 'यह राखी बन्धन है ऐसा, जैसे चन्दा और किरण का' लता मंगेशकर और मुकेश की आवाज़ में ऐसा गूंजा कि रक्षाबन्धन के त्यौहार की स्थायी आवश्यकता बन गया। वर्मा मलिक की लेखनी में कविता का जो रंग

था, वह इस गीत के शब्दों में ख़ूब छलका है। शंकर-जयकिशन के संगीत से सुसज्जित यह गीत आज भी सुननेवालों को रेडियो के ज़माने की याद दिलाता है।

वर्ष 1974 में प्रसारित हुई फिल्म 'रेशम की डोरी' का गीत 'बहना ने भाई की कलाई पर प्यार बांधा है' आज तक उन बहनों को याद है जो रक्षाबन्धन के त्यौहार पर मेलों से स्पंज वाली बड़ी-बड़ी राखियाँ ख़रीदकर लाती थीं। इन्दीवर के शब्द, शंकर-जयकिशन के सुर और सुमन कल्याणपुर का स्वर -इस सफल संयोग ने गीत के सौन्दर्य में चार चांद लगा दिए।

1974 में ही अमिताभ बच्चन अभिनीत फिल्म 'मजबूर' में 'नहीं मैं नहीं देख सकता तुझे रोते हुए' गीत सम्मिलित था। किशोर कुमार के स्वर में शंकर-जयकिशन के संगीत से सजा यह गीत बचपन के उन निश्छल प्रेम की अभिव्यक्ति है, जिसमें एक भाई के लिए उसकी बहन से अधिक आवश्यक कुछ नहीं होता।

भाई-बहन का रिश्ता बचपन की उस दोस्ती का रिश्ता होता है जिसे जीवन भर न तो भाई भूल पाता है न ही बहन की स्मृतियों से इस खट्टे-मीठे रिश्ते की झलकियाँ कभी ओझल हो पाती हैं। लगभग इसी संवेदना को गुलशन बावरा ने वर्ष 1976 की फिल्म 'अदालत' के गीत 'बहना ओ बहना तेरी डोली मैं सजाउंगा, तेरी आएगी बारात होगी आँखों की बरसात, हँस-हँस के मैं दुखड़ा विदाई का छुपाउंगा' में भी अभिव्यक्त किया था। मुकेश की दर्द भरी आवाज़ ने इस गीत की भावुकता को सिसकी में तब्दील कर दिया।

यसुदास, पामेला चोपड़ा और किशोर कुमार की आवाज़ में साहिर लुधियानवी का एक गीत 'जा री बहना जा, तू अपने घर जा' खैयाम साहब ने तैयार किया 1978 की फिल्म 'त्रिशूल' के लिए। बहन की विदाई का यह गीत भाई-बहन के रिश्ते की उस अनुभूति को अभिव्यक्त करता है, जिसमें हर भाई अपने बचपन की सबसे पक्की दोस्त से दूर होने की पीड़ा सहता है।

वर्ष 1980 में बनी फिल्म 'दाता' में अनजान का लिखा गीत 'बाबुल का ये घर बहना कुछ दिन का ठिकाना है' जब कल्याणजी-आनन्दजी की धुन से सिंगरकर किशोर कुमार और अलका याग्निक की आवाज़ में सिनेमाघरों में गूंजा तो अग्रिम पंक्ति से लेकर बालकॅनी तक एक-एक

व्यक्ति सुबक कर रो पड़ा। इसी वर्ष में 'चम्बल की क़सम' फिल्म का गीत 'चंदा रे, मेरे भैया से कहना, बहना याद करे' लता जी की आवाज़ में ब्याहता बहनों के एकाकीपन की अभिव्यक्ति बन गया।

वर्ष 1986 में जितेन्द्र, मिथुन चक्रवर्ती, जयाप्रदा और पद्मिनी कोल्हापुरे जैसे सितारों के साथ फिल्म आई 'ऐसा प्यार कहाँ'। इस फिल्म का टाइटल सांग ही बहन के लिए भाई के बलिदान तथा समर्पण की गाथा कहता दिखाई दिया।

वर्ष 1993 में सन्तोष आनन्द जी ने तिरंगा फिल्म के लिए एक गीत लिखा, 'इसे समझो न रेशम का तार भैया, मेरी राखी का मतलब है प्यार भैया'। इस गीत को साधना सरगम ने गाया यह गीत वर्षा उसगांवकर पर फिल्माया गया और गीत अपने अन्योक्ति गुण के कारण विलक्षण बन गया।

1998 में 'डोली सजा के रखना' फिल्म में साधना सरगम की आवाज़ में 'झूला बाँहों का आज भी दो ना मुझे' गीत रिलीज़ तो हुआ लेकिन कोई ख़ास पहचान नहीं बना पाया।

समय के साथ कमर्शियल वैल्यू बढ़ती गयी और भाई बहन के रिश्तों पर आधारित गीतों का मार्किट तलाशने में नाकाम रहे फिल्मकारों ने इन गीतों को अघोषित रूप से अनावश्यक करार दे दिया। बहन की शादी के अवसर पर कोई गीत कभी आया भी तो वह 'आज है सगाई सुन लड़की के भाई ज़रा नाच के हमको दिखा' टाइप के मसाला कंटेंट से युक्त रहते हैं। इनका भाई-बहन के रिश्ते से कोई लेना-देना नहीं होता।

इस रक्षाबन्धन पर अक्षय कुमार की एक फिल्म 'रक्षाबन्धन' शीर्षक से ही रिलीज़ हो रही है। इस फिल्म में राखी पर आधारित एक गीत की चर्चा भी फिल्म जगत् में शुरु हो गई है।

हालांकि हिन्दी फिल्मों के इतर मराठी, गुलराती, तमिल, तेलुगू और असमिया सिनेमा में भी राखी और बहन-भाई के सम्बन्ध पर आधारित अनेक चर्चित गीत रहे हैं लेकिन बहुत तेज़ी से दौड़ते दौर के पास इस मासूम से रिश्ते को अभिव्यक्त करने के लिए अब समय नहीं बचा है।

न तो इस मासूम रिश्ते को सहेजने का वक़्त बचा है, न ही अभिव्यक्त करने का। एकल परिवारों के चलन ने बचपन के इस हमजोली को छीनकर हमें कितना एकाकी कर दिया है, इसका आभास हमारी पीढ़ियों को होगा।

राखी बांधत जसोदा मैया

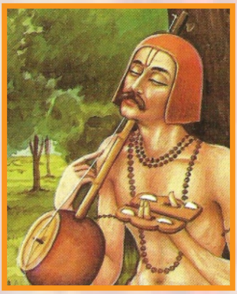

सूरदास

राखी बांधत जसोदा मैया।
विविध सिंगार किये पटभूषण, पुनि-पुनि लेत बलैया
हाथन लीये थार मुदित मन, कुमकुम अक्षत मांझ धरैया
तिलक करत आरती उतारत अति हरख-हरख मन भैया
बदन चूमि चुचकारत अतिहि भरि-भरि धरे पकवान मिठैया
नाना भाँति भोग आगे धर, कहत लेहु दोउ मैया
नर-नारी सब आय मिली तहाँ निरखत नन्द ललैया
सूरदास गिरिधर चिर जीयो गोकुल बजत बधैया

सूरदास

भाई बहन

तू चिनगारी बनकर उड़ री, जाग-जाग मैं ज्वाल बनूँ
तू बन जा हहराती गंगा, मैं झेलम बेहाल बनूँ
आज बसन्ती चोला तेरा, मैं भी सज लूँ, लाल बनूँ
तू भगिनी बन क्रान्ति कराली, मैं भाई विकराल बनूँ
यहाँ न कोई राधारानी, वृन्दावन, वंशीवाला
तू आंगन की ज्योति बहन री, मैं घर का पहरेवाला

बहन प्रेम का पुतला हूँ मैं, तू ममता की गोद बनी
मेरा जीवन क्रीड़ा-कौतुक तू प्रत्यक्ष प्रमोद भरी
मैं भाई फूलों में भूला, मेरी बहन विनोद बनी
भाई की गति, मति भगिनी की; दोनों मंगल-मोद बनी
यह अपराध कलंक सुशीले, सारे फूल जला देना
जननी की ज़ंजीर बज रही, चल तबियत बहला देना

भाई एक लहर बन आया, बहन नदी की धारा है
संगम है, गंगा उमड़ी है, डूबा कूल-किनारा है
यह उन्माद, बहन को अपना भाई एक सहारा है
यह अलमस्ती, एक बहन ही भाई का ध्रुवतारा है
पागल घडी, बहन-भाई है, वह आज़ाद तराना है
मुसीबतों से, बलिदानों से, पत्थर को समझाना है

गोपाल सिंह 'नेपाली'

हुमायूँ की राखी

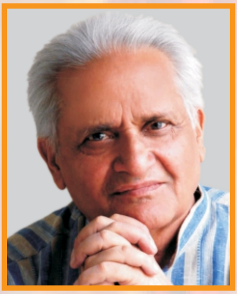

पन्डित नरेन्द्र मिश्र

गुजरात का शासक बहादुरशाह मेवाड़ पर आक्रमण करता है। राजपूत प्राण-प्रण से लड़ते हैं, लेकिन संख्या में कम होने के कारण जब उन्हें अपनी स्पष्ट विजय के आसार धूमिल लगने लगते हैं तब महारानी कर्मवती अपनी सहायतार्थ शहंशाह हुमायूँ को राखी भिजवाती है। मुल्ला-मौलवियों के तीव्र विरोध पर भी हुमायूँ बहन की रक्षा को आता है। हुमायूँ डेढ़ कोस दूर तक पहुँच पाता है कि रानी निराश होकर जौहर कर जाती है। उधर हुमायूँ बड़े बहादुरशाह को परास्त करके उत्साह के साथ चित्तौड़गढ़ में प्रवेश करता है तो उसे वहाँ बहन की राख दिखाई देती है। इसी किस्से के आधार पर यह कविता लिखी गयी है।

लेकर नंगी कृपाण कर में तब शाह हुमायूँ गरज उठा
जिसके भीषण दुर्जय स्वर से वसुधा का साहस लरज उठा
बोला- "तुम क्यों बहकाते हो, ले-ले मज़हब का नाम मुझे
ग़ुमराह कर रहे हो आख़िर, प्यारा पहले इस्लाम मुझे।
जो दुश्मन नेकदिली का है, वह दुश्मन है इन्सानों का
वह क़ाफ़िर है, नंगा करता दामन पाक़ीज़ा बहनों का
कच्चे धागे की एवज में ज़र्रा-ज़र्रा नहला दूंगा
जो मज़हब का क़ौमी दुश्मन, उसको दोजख़ पहुँचा दूंगा
हमला होगा बढ़ चलो अभी इस्लामी ख़ून बफ़ा कर दो
रख लो सब प्राण हथेली पर, तारीख़ों में जौहर भर दो
फिर क्या था भीषण रण करने सज गया कटक बेग़ानों का
राखी की लाज बचाने को दल बढ़ता मुग़ल पठानों का

उस शेर बबर बाबरसुत की तलवार मचलती जाती थी
इतिहास बदलता जाता था, तारीख़ बदलती जाती थी

बढ़ रहा हुमायूं उधर, इधर शोणित की निर्मम प्यास बढ़ी
प्रलयंकर शंकर के स्वर में भीषण रणचण्डी मचल पड़ी
इस तरफ़ बहादुरशाह, उधर मतवाले राजपूत लड़ते
थे प्राण हथेली पर जिनके, सिर बांधे क़फ़न बढ़े चलते
सब आग उगलती थी तोपें फिर भी बढ़ने की चाह रही
गोली वर्षा-सी बरस रही प्राणों की कब परवाह रही
फिर भी मेवाड़ी बलिदानी विकराल काल-से लगते थे
थे स्वतन्त्रता के दीवाने अरिदल का कण्ठ कतरते थे
पर चिनगारी, चिनगारी है सारा जग नहीं जला सकती
मानी दिनकर की एक किरण सारा तम नहीं हटा सकती
आख़िर केसरिया झण्डे की तिल-तिलभर ताक़त जूझ गयी
भगवान बुद्ध की यह धरती उस दिन शोणित में डूब गयी
तब तक न हुमायूँ आ पाया, महलों की हिम्मत टूट गयी
भाई के आने की आशा रानी के मन से छूट गयी
चित्तौड़ दुर्ग में जौहर की तब चाह मचलती जाती थी
इतिहास बदलता जाता था, तारीख़ बदलती जाती थी

वृद्धा माताएँ एक तरफ़, बहनें जलतीं दूसरी तरफ़
तूफ़ानी जोश लिये मन में जलती बालाएँ एक तरफ़
कुछ थीं साजन घर जाने को अन्तर में भाँवर का स्वर था
डोली फूलों से सजी हुई, पैरों में लगा महावर था
कुछ मेहंदी हाथ सजाये थी, मुख पर झिलमिल अवगुंठन था
हल्दी से चूनर पीली थी, कर में परिणय का कंकण था
पर भस्म हो गयीं हँस-हँसकर चित्तौड़ दुर्ग की महिलाएँ
इतिहास कीर्ति दोहरायेगा, जौहर साहस की प्रतिमाएँ
चढ़ गयी चिता पर कर्मवती भाई को पता न लग पाया
बस डेढ़ कोस का अन्तर था तब तक न हुमायूँ आ पाया
हो गया बहादुरशाह मगन दुन्दुभी जीत की बजवायी
तब ही 'अल्लाह हू अकबर' की ध्वनि एक बार फिर से आयी
मुग़लों ने तलवारें खींचीं, बाबर का बेटा आ पहुँचा
हिन्दू रानी का मुसलमान भाई आख़िर आ ही पहुँचा

मज़हब की क़ौमी कट्टरता उस रोज़ पिघलती जाती थी
इतिहास बदलता जाता था, तारीख़ बदलती जाती थी

सारे लश्कर को रोक हुमायूँ एक बार बोला फिर से
मेरे बहादुरों मज़हब की लिख दो तारीख़ नये सिर से
यह बहादुरों की धरती है, हिम्मत तूफ़ानी कर लो अब
है फ़र्ज़ तुम्हारे कन्धों पर भाई का पानी रख दो अब
पीछे न क़दम रखना शेरों, है आज आज़माइश सबकी
ले लो तलवार बढ़ो आगे अल्लाह मदद को है सबकी
फिर क्या था, पल की देर न थी, लश्कर दुश्मन पर टूट पड़ा
मानो ज्वालाएँ गर्भ लिये, पर्वत से दरिया फूट पड़ा
दुश्मन तब तक सम्हला ही था, मुग़लों ने घेर लिया आकर
शस्त्रों के अगणित वार हुए अभिमानी अरिदल के सिर पर
मानवता के बल के आगे, दानव की क्या चल सकती थी
जब दुष्ट बहादुरशाह भगा, सेना कैसे रुक सकती थी
ज़ालिम के मनसूबों की अब तक़दीर बदलती जाती थी
इतिहास बदलता जाता था, तारीख़ बदलती जाती थी

महलों में शाह गया लेकिन मरघट-सी ख़ामोशी पायी
चित्तौड़ दुर्ग के प्रांगण में जौहर की आग नज़र आयी
जब राख बहन की देखी तब जैसे सीने में लगा तीर
फट गयी हुमायूँ की छाती, करुणा-क्रन्दन कर उठा वीर
तू राजपूत थी, हिन्दू थी, क्या यही बात तूने देखी
मैं मुसलमान था, इसीलिये तूने न राह मेरी देखी
क्यों ठीक वक़्त पर आ न सका, क्यों टूटा नहीं कहर मुझ पर
तू चली गयी, मैं ज़िन्दा हूँ; लानत सौ बार बहन मुझ पर
मैं बुरी तरह से हार गया, तारीख़ों में यह जीत सही
यह कह पछाड़ खा गिरा वीर, सिर से शोणित की धार बही
उस गर्म राख को शोणित से ठण्डा करता रो रहा खड़ा
मानो अम्बर के अन्तस से करुणा का स्रोता फूट पड़ा
था मुसलमान, पर नैनों से जलधार निकलती जाती थी
इतिहास बदलता जाता था, तारीख़ बदलती जाती थी

पण्डित नरेन्द्र मिश्र

हम तुम

बंधु।
हम-तुम प्रिय महकते फूल
गेह-तरु की नेह-डाली के।

हम पिता की आँख के सपने
और माँ की आँख के मोती
प्रिय बहन के मन-निलय में भी
रौशनी हम बिन नहीं होती

बंधु।
हम-तुम प्रिय महकते फूल
एक पूजा-सजी थाली के।

एक ही शुभ गीत के प्रिय स्वर
एक ही प्रिय शब्द के अक्षर
हैं उड़ानों की लयें जिनमें
एक पक्षी के सुभग दो पर

बंधु।
हम-तुम प्रिय महकते फूल
एक क्यारी, एक माली के।

कुँअर बेचैन

अधूरा अभंग

डॉ. अनामिका

"अपनी जगह से गिरकर
कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाख़ून" -
अन्वय करते थे किसी श्लोक को ऐसे
हमारे संस्कृत टीचर।
और मारे डर के जम जाती थीं
हम लड़कियाँ अपनी जगह पर।

जगह?
जगह क्या होती है?
यह वैसे जान लिया था हमने
अपनी पहली कक्षा में ही।

याद था हमें एक-एक क्षण
आरंभिक पाठों का-
राम, पाठशाला जा!
राधा, खाना पका!
राम, आ बताशा खा!
राधा, झाड़ू लगा!
भैया अब सोएगा
जाकर बिस्तर बिछा!

अहा, नया घर है!
राम, देख यह तेरा कमरा है!
'और मेरा?'
'ओ पगली,
लड़कियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती हैं
उनका कोई घर नहीं होता।'
जिनका कोई घर नहीं होता-
उनकी होती है भला कौन-सी जगह?
कौन-सी जगह होती है ऐसी
जो छूट जाने पर औरत हो जाती है।
कटे हुए नाख़ूनों,
कंघी में फँसकर बाहर आये केशों-सी
एकदम से बुहार दी जानेवाली?

घर छूटे, दर छूटे, छूट गए लोग-बाग
कुछ प्रश्न पीछे पड़े थे, वे भी छूटे!
छूटती गयी जगहें
लेकिन, कभी भी तो नेलकटर या कंघियों में
फँसे पड़े होने का एहसास नहीं हुआ!

परम्परा से छूटकर बस यह लगता है-
किसी बड़े क्लासिक से
पासकोर्स बी.ए. के प्रश्नपत्र पर छिटकी
छोटी-सी पंक्ति हूँ-
चाहती नहीं लेकिन
कोई करने बैठे
मेरी व्याख्या सप्रसंग।

सारे संदर्भों के पार
मुश्किल से उड़कर पहुँची हूँ
ऐसी ही समझी-पढ़ी जाऊँ
जैसे तुकाराम का कोई
अधूरा अंभग!

डॉ. अनामिका

बहन का पत्र

कुशल-क्षेम से पिया-गेह में बहन तुम्हारी है

सुबह, सास की झिड़की बदन झिंझोड़ जगाती है
और ननद की जली-कटी नश्तरें चुभाती है
पूज्य ससुर की आँखों की बढ़ गयी खुमारी है
कुशल-क्षेम से पिया-गेह में बहन तुम्हारी है

नहीं हाथ में मेहंदी; झाड़ू, चूल्हा-चौका है
देवर रहा तलाश निगल जाने का मौका है
और जेठ की जिह्वा पर भी रखी दुधारी है
कुशल-क्षेम से पिया-गेह में बहन तुम्हारी है

पति परमेश्वर सिर्फ़ चाहता खाना गोश्त गरम
और पड़ोसिन के घर लेती है अफ़वाह जनम
करमजली होती शायद दुः खियारी नारी है
कुशल-क्षेम से पिया-गेह में बहन तुम्हारी है

कई लाख लेकर भी गया बनाया दासी है
और लिखी किस्मत में शायद गहन उदासी है
नहीं सहूंगी- अब दुःख की भर गयी तगारी है
कुशल-क्षेम से पिया-गेह में बहन तुम्हारी है

नचिकेता

मेरी गुड़िया

जब से मेरी गुड़िया चिड़िया हुई है
...तब से

कोई नहीं बिखेरता
मेज़ पर रखी मेरी किताबों को
कोई नहीं फाड़ता
मेरे ज़रूरी काग़ज़ों को,
कोई नहीं बनाता
अख़बारों पर चीथ-मकौड़े
कोई नहीं लिखता
दीवारों पर- "भैया पगला, मैं अच्छी!"
जब से मेरी गुड़िया
चिड़िया हुई है
तब से....

हाँ, पिछले कुछ दिनों से
मेरे कमरे की खिड़कियों पर,
रौशनदानों में,
दीवारों पर टँकी तस्वीरों के पीछे,
पंखों के कटोरों में...
कुछ तिनके
क़रीने से सजे नज़र आने लगे हैं।
जब से मेरी गुड़िया
चिड़िया हुई है
तब से....!

अनिल 'अभिषेक'

बहना मायके आना

नहीं रही माँ! तो मत संशय में आ जाना तुम
माँ-सा लाड़ करूंगा बहना, मायके आना तुम

स्वागत करती तख़्ती जैसा जड़ा मिलूंगा मैं
फूलों जैसा तुम्हें राह में पड़ा मिलूंगा मैं
मुख्य द्वार पर बैठी माँ ज्यूँ रस्ता तकती थी
लगा टकटकी उसी द्वार पर खड़ा मिलूंगा मैं
जैसे माँ से मिली, मुझे यूँ गले लगाना तुम
माँ-सा लाड़ करूंगा बहना, मायके आना तुम

सिर्फ़ अकेली! या फिर बच्चों को लाओगी तुम
राखी के कितने दिन पहले आ जाओगी तुम
कितने दिन अब और बचे हैं हर दिन पूछूंगा
माँ के जैसा ही बैचेन मुझे पाओगी तुम
कहाँ-कहाँ तक पहुँची- करके फोन बताना तुम
माँ-सा लाड़ करूंगा बहना, मायके आना तुम

तुम्हें लगाने को बिटिया ने मेहंदी घोली है
बेटे ने कुछ उम्मीदों की सूची खोली है
साड़ी मनपसंद ख़रीदूंगी ख़ुद बहनों की
मुझे तुम्हारी भाभी कल ही ऐसा बोली है
दुनिया की बातों में मन को मत उलझाना तुम
माँ-सा लाड़ करूंगा बहना, मायके आना तुम

एक इमारत है, ईंटें हैं, केवल गारा है
इनको घर कर देता पावन प्यार हमारा है
दौलत के झूठे चीथड़ों में नहीं लपेटा था
मात-पिता ने सदा प्रेम से हमें सँवारा है
नेह तिलक जीवन भर मेरे भाल लगाना तुम
माँ-सा लाड़ करूंगा बहना, मायके आना तुम

धर्मेन्द्र सोलंकी

बहन की विदाई

हर पल मेरे दिल में रहना
जाते-जाते सुन ओ बहना!
तुम तो हो दो कुल का गहना
जाते-जाते सुन ओ बहना!

एक कोख़ से जन्म लिया है, एक साथ में खेले
एक साथ में धूप-छाँव से, सुख-दुःख हमने झेले
तुम तो हो दो कुल का गहना
जाते-जाते सुन ओ बहना!

डोली में चल बैठ लाड़ली, दूँ मैं तुझे विदाई
भरे नयन से दूर कर रहा, अपनी ही परछाई
तुम तो हो दो कुल का गहना
जाते-जाते सुन ओ बहना!

याद बहुत आयेगी तेरी, जब आयेगा सावन
तुम्हें खींच लायेगा मुझ तक, पावन रक्षाबंधन
तुम तो हो दो कुल का गहना
जाते-जाते सुन ओ बहना!

संजीव 'शशि'

राखी पकड़ बहन रोयेगी

जीजा-साले के झगड़े में
राखी पकड़ बहन रोयेगी

उसका कोई दोष नहीं है, फिर भी दंड उसी ने पाया
इस सावन भी छोटा भाई, नहीं लिवाने उसको आया
पति ने भी आदेश दिया है, बिना बुलाये तुम मत जाना
दो पुरुषों के अहंकार को आज पुनः नारी ढोयेगी
जीजा-साले के झगड़े में राखी पकड़ बहन रोयेगी

भाई सूनी लिए कलाई, झुकने को तैयार नहीं है
पत्नी पल-पल घुटे बताओ, क्या यह पति की हार नहीं है
कुछ मासूम बुआ को रोएँ, कुछ मामा के घर जाने को
कुछ इच्छाएँ आस लगाए सारा दिन थककर सोयेंगी
जीजा-साले के झगड़े में राखी पकड़ बहन रोयेगी

एक बंधा कच्चे धागे से, और दूसरा जीवनसाथी
ऐसे में वह बेबस औरत, बोलो किसका साथ निभाती
दोनों तरस नहीं हैं खाते, उस दुःखियारी की हालत पर
यदि भाई से नेह निभाये तो पति की निष्ठा खोयेगी
जीजा-साले के झगड़े में राखी पकड़ बहन रोयेगी

अभिषेक औदिच्य

रक्षा बंधन

छोड़ो रूसा-रासी भैया आगे करो कलाई
रक्षाबंधन के दिन बहना राखी लेकर आई

सावन की पूरणमासी का यह त्यौहार निराला
भाई और बहन के मन को पुलकित करनेवाला
रक्षा का व्रत लेकर भाई बन जाए रखवाला
पूजा की थाली में अपना प्यार सजाकर लाई
रक्षाबंधन के दिन रहना बहना राखी लेकर आई

यही कामना करते बहना की राखी के धागे
अच्छे कामों में हो मेरे भैया सबसे आगे
हँसते-हँसते सोये हर दिन हँसते-हँसते जागे
सूरज-चाँद-सितारे सारे देते रहें बधाई
रक्षाबंधन के दिन बहना राखी लेकर आई।

डॉ. कीर्ति काले

बहन से वायदा

कलाई पे जो बांधी डोर, उसकी लाज हूँ बहना
कभी भी आज़मा ले तू तेरी आवाज़ हूँ बहना

सजाये साथ जो बचपन में थे माँ-बाप के घर में
उन्हीं ख़्वाबों को पर देने को मैं परवाज़ हूँ बहना

पिता की छाँव, माँ की गोद में मिलकर जो सीखे थे
मैं अब तक भी वो तुतलाते हुए अल्फ़ाज़ हूँ बहना

तुझे करके विदा मैं भी निकल आया कमाने को
वो सूना देख घर ख़ुद पर ही अब नाराज़ हूँ बहना

पिता के घर का ही हिस्सा है भाई का ये आंगन भी
नया आंगन लिए रिश्तों का फिर आग़ाज़ हूँ बहना

भले मिल पाऊँ न तुझसे तू फिर भी ये यक़ीं रखना
नहीं बदला, जो मैं कल था वही मैं आज हूँ बहना

प्रगीत कुँअर

एक मीठी याद

संध्या यादव

राखी के बाद वाला दिन यानि सोमवार था वो। हमेशा की तरह प्लेटफॉर्म के दोनों तरफ़ से ट्रेन गुज़री थी और ब्रिज ठसाठस भरा था। नीचे उतरना था धक्का खाते, धक्का देते हुए। सीढ़ियों के ठीक नीचे रेलवे स्टॉल है। वहीं खड़ा था वो। मेरी नज़रें नीचे की तरफ़ भीड़ से बचने की चाह में रास्ता तलाशतीं, उसकी नज़रें ऊपर को मेरा इंतज़ार करती मिल ही गयी थीं। इंतज़ार आँखों से छलक रहा था शायद अब बेसब्रा भी हो गया था।

'दीदी तेरे कू मालूम कबसे खड़ा मैं इधर?' मेरी नज़रें इंडिकेटर पर अपनी रोज़ की ट्रेन का समय देखते में व्यस्त थीं।

'क्या हुआ?'

'मेरे कू लगा तू चली गयी, या आज नहीं आयेगी।'

'क्या बात है आज मेरा इंतज़ार? आज आपके साथी नहीं हैं क्या?' - मैंने भी मुस्कुराते हुए कहा।

पिछले कई दिनों से वो चार लोगों के साथ होता है और ऐसी अवस्था में हम बस एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा देते हैं।

'दीदी सुन ना, एक काम होता, तू करेगी क्या?'

'पहले आप बताओ! मैं सुनकर फिर बताऊंगी।' सीढ़ियों के पास उसने मुझे, जहाँ शायद एक-दो लोग खड़े थे बुलाया और अपनी हथेली आगे को कर दी। हथेली पर एक राखी जगमगा रही थी।

'तू मेरे कू बांधेगी क्या?'

मुझे नहीं पता ऐसा क्यों हुआ, पर बिना समय गँवाये मैंने वो राखी

उसकी कलाई पर बांध दी। मुझे नहीं पता कितने लोगों ने मुझे ऐसा करते देखा। मुझे नहीं पता कि उन्होंने मेरे बारे में क्या सोचा। मुझे सिर्फ़ इतना पता है ये वो क्षण था जो मेरी ज़िंदगी की किताब में हमेशा सम्हालकर रखा जायेगा। उसने तुरन्त दूसरी हथेली आगे कर दी, जिसमें दो (हॉल्स) गोलियाँ थीं। 'राखी बांधने के बाद मिठाई भी खिलाते हैं ना।'

'पर आपने तो मुँह मीठा ही नहीं, ठंडा भी कर दिया।' -हम दोनों ने ज़ोर का ठहाका लगाया था। उसने एक काग़ज़ में लिपटा दो 'चाफा' के फूल मुझे दिये। अगले रोज़ वो वहीं मेरे लिये प्रतीक्षा में खड़ा था। मैंने वो फूल अपने बालों में लगा रखे थे। चेहरे को हथेलियों में दबा वो आश्चर्य से आँखों से आँसू बहाता मुझे देख रहा था। मैं बालों में फूल नहीं लगाती, पर उस दिन मैंने लगाया था... ये सोचकर कि ये ईश्वर का प्रसाद है। अपने बायें हाथ में लगी चोट की वजह से अब अक्सर मैं चलती ट्रेन में कूदकर नहीं चढ़ पाती, पर मेरा ये भाई जब भी प्लेटफॉर्म पर उपस्थित हो, मुझे देखकर ट्रेन के आते ही कूदकर चढ़ जाता है और मेरे लिये सीट भी पकड़ने में अक्सर क़ामयाब हो जाता है। रिश्ते ख़ून, नाम, नस्ल, जाति, धर्म, भाषा या लिंग के मोहताज नहीं होते- ये बात किताबों में पढ़ी थी, पर ज़िंदगी में देख भी लिया है।

'अब मैं तेरा भाई ...जब भी गरज पड़े बोलने का।'

'रुको, जब सबके साथ रहोगे तब बोलूंगी।'

'ए दीदी, तू मेरी बहन ना! एइसा नहीं करने का।' -हाथ जोड़ता है। तब मन चीत्कार उठता है। ईश्वर अगले जन्म इसे इस कष्ट से मुक्त कर देना।

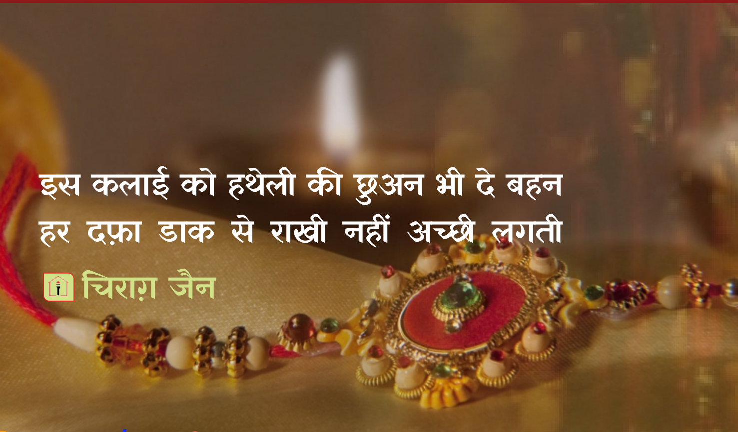

नैहर की पाती

शैलजा पाठक

भाई-बहनों में कुत्ते-बिल्ली का सम्बंध होता है। अगर जो बहन की काग़ज़ की नाव मटक के चल रही तो हर जलनखोर भाई उसको अपनी बदतमीज़ी से डुबा देगा। साइकिल से गिराने से लेकर लोगों के सामने हमारे सहूर की पोल खोलने तक की चाबी इनके पास होती है। हमारे दोस्तो पर ये दुनिया की तमाम बकलोल पैरोडी बना चुके होते हैं।

इन लड़ाइयों में एक ही सुलझाने की आवाज आती है - 'कब जाएगी ये हमारा घर छोड़कर!'

ब्याह की ख़ुशी में भाई के चार दोस्तों ने मिलकर एक-डेढ़ सौ की दीवार घड़ी दी मुझे। अब जबकि मैं घड़ी के साथ निकल गयी, तो ये साथ घड़ी-घड़ी याद आने लगा। नये घर की तमाम पॉलिश चीज़ों के बीच मेरे गिड़गिड़ाने से घड़ी क़ीमती सामानों के साथ टँक गयी। घड़ी की टिकटिक दो कमरों तक सुनायी देती। सारा दिन अकेले रहने के क्रम में घड़ी की आवाज़ मन थामे रहती।

मैं देर तक उसकी ओर देखती तो लगता कोई बाल खोल गया मेरे। कोई किताबें हटा रहा टेबल से। कोई बाहर से चिल्ला रहा- 'बिलरो आज गरम रोटी बना दिह!'

दिन के बारह बजे काम से थक जाती, तब घड़ी थपकी-सी बजती। कहती सब नया-नया है ना, हो जाएगी आदत। दीवाली में जब झोले भर पटाखे आते मेरी उस घड़ी में चार जलेबी, तीन फुलझड़ी, दो अनार के हिस्से लगते देखती। होली में घड़ी बन्द रहती। इत्ती सभ्यता के रंग में उदास घड़ी मुँह फेर लेती। हुड़दंग मन मे दबा होता। पर इन महीनों घड़ी ख़ूब साफ़ चमकती।

ठहर-ठहर कर तारीख़ें याद दिलाती। रात के नौ बजे, तो लगता उधर अम्मा सबके साथ बैठकर मुझे बुला लेने की बात कर रही हैं- 'पहली राखी है लड़की पैर फेर जाए ज़रा।'

मैं कुर्सी पर चढ़ के घड़ी को चूम लेती। घड़ी के साथ लम्बी बातों से मैं बोलना नहीं भूली। सावन राखी के गीत पर घड़ी में पीढ़े वाला झूला लटका देती अम्मा। उस पर भी भाई चाहता कि हम गिर जाएँ या वो ज़ोर-ज़ोर से हिला-डुला हमें गिरा दे। कुछ बरस हुए घड़ी नहीं रही। ...जैसे अम्मा नहीं रही! ...जैसे बनारस रहकर भी कम-सा है। मौसम को पता है, बेटियों के घर जाने का मौसम। बुलाओ भाई लोग, छतों पर बारिशें हों हम जी भर भीग लें। झूला न सही बातों को याद कर मगन हो लें।

हर ब्याही औरत के अंदर की वो अलमस्त दो चोटी वाली लड़कियाँ चाहती हैं, छतों की बारिश से भीग, घर के आंगन में उतरे

और तुम हमें ख़ुश देख आँखें नीची कर उदासी छिपाओ। भर्राये गले से कहो- 'समय-समय पर आ जायल करा बिल्लो! अब तू लोग के बिना बारिश पकौड़ी क कौनो मजा न आवत। वैसे भी बच्चा उठाने वाली चुड़ैलें कम हो गयी हैं मुहल्ले में।'

घड़ी हर घड़ी मन में टिकटिक कर रही है। बताओ ज़रा, रक्षाबंधन कब है? **शैलजा पाठक**

राखी आयी रे!

हिमांशु बवंडर

आपको एक जानकारी देते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है वह यह कि इस महीने एक बहुत पवित्र त्यौहार है। इसे राखी भी कहते हैं और एक जानकारी वह दे देता हूँ, जो आपको पता है, कि यह पर्व पूर्णिमा पर मनाया जाता है। ऐसी बहुत-सी जानकारियाँ मेरे पास हैं, लेकिन अपने ऊपर घमंड क्या करना!

चूँकि अब यह पर्व आने वाला है, तो इस बारे में बात नहीं करेंगे कि इसे कैसे मनाते हैं और क्यों मनाते हैं? पहली राखी किसने, किसको बांधी; क्यों बांधी; फिर हुमायूँ वाली राखी; या अलेक्जेंडर ने पुरु को जो राखी भेजी थी उसकी बात नहीं करते हैं। बाक़ी एक चमत्कारी बात तो है इस धागे में, जिसके आगे बड़े-बड़े हथियार शून्य हो जाते हैं। अब चूँकि यह त्यौहार आया है, तो बाज़ारवाद भी अपने चरमोत्कर्ष पर होगा। ऑनलाइन राखियाँ मिलेंगी, बाज़ार सजाएंगे, दुकानों पर बोर्ड टाँकेंगे- राखियाँ ही राखियाँ। थोक भाव की राखियाँ। बच्चों के लिए छोटा भीम और शिनचैन वाली राखियाँ। चार राखी के साथ दो मुफ़्त। अगर लड़की का भाई एक ही है तो वह 4 लेकर करेगी क्या।

हर मुहल्ले में ऑलरेडी हर एक लड़के के पास दो से तीन राखी बहनें होती हैं। समाचार-पत्रों में और पत्रिकाओं में लेख देखिये किस प्रकार छपेंगे- इस रक्षाबंधन बहन को दें ये ख़ास उपहार। ऐसे बनाएँ घर पर राखी। केवल पाँच मिनिट में मेहमानों को करे इंप्रेस। न्यूज़ चैनल वाले अपने-अपने ज्योतिषियों को बैठाकर शुभ मुहूर्त चौघड़िया बताएंगे और कमाल की बात यह है कि हर न्यूज़ चैनल पर हर ज्योतिषी अपने हिसाब से शुभ मुहूर्त और चौघड़िया बताता है। ऐसा लगता है चंद्र, सूर्य,

मंगल, बुध आदि ग्रह इन ज्योतिषों से ही पूछकर अपनी घूमने की गति निर्धारित करते होंगे। (यहाँ बात व्यंग्य में कही गयी है।) बारह राशियों के जातकों के भविष्यफल में उस दिन दो बातें बहुत सामान्य होंगी। पहला, आप किसी यात्रा पर जा सकते हैं। दूसरा, कोई अतिथि आज आपके घर पर आ सकता है। स्वाभाविक है, या तो भाई बहन के घर जाता है या बहन भाई के घर आती है।

ख़ैर बात आगे बढ़ाते हैं। इस देश में हिंदू सनातन संस्कृति में हम सात बार में नौ त्यौहार मनाते हैं राखी एकमात्र ऐसा त्यौहार है जिसे हम हर्ष-उल्लास और साले के साथ मनाते हैं। आदमी की अर्थव्यवस्था तक डगमगाती है। जब ख़ुद की बहन को त्यौहार का बजट देना हो और साले की बहन को भी त्यौहार का बजट देना हो।

राखी के त्यौहार में उन गानों पर से धूल हट जाएगी जो बॉलीवुड ने भाई-बहनों के ऊपर लिखे हैं। जैसे, 'मेरी बहना दीवानी है' या 'इसे समझो ना रेशम का तार भैया, मेरी राखी का मतलब है प्यार भैया'। हमारी फिल्म इंडस्ट्री भी कमाल की है। जिनका मैंने जिक्र किया, इन दोनों गानों के जस्ट बाद का सीन देखिए पहला गाना अंधा कानून मूवी से है, जहाँ हेमामालिनी रजनीकांत को राखी बांधने के बाद दूसरे ही सीन में उसे उसी कलाई पर हथकड़ी बांधने के लिए आतुर रहती है। दूसरा गाना तिरंगा पिक्चर का है, जो भाई अपनी बहन से राखी बंधवाकर अपनी बहन को सुरक्षा का वचन देता है। जस्ट इसी गाने के ख़त्म होने के बाद वह ख़ुद गोलियों से मर जाता है। वैसे अगस्त के महीने में तिरंगा पिक्चर केवल दो कारणों से दिखाई जाती है। एक तो राखी पर इस गाने के लिए, और दूसरा पंद्रह अगस्त पर ब्रिगेडियर सूर्यदेव सिंह को गेंडास्वामी की मिसाइल के फ्यूज कंडक्टर निकालने होते हैं। आप लोगों ने ग़ौर किया हो या न किया हो। देश में जितने त्यौहार हैं वे सब महिलाओं के लिए हैं। हर त्यौहार में महिलाओं के नाम पर क्या आता है- मिठाइयाँ, ज्वेलरी, कपड़े, शॉपिंग। सारी चीजें मैचिंग में। और पुरुषों के नाम पर आते हैं केवल बिल।

आजकल तो भाई, बहन से यह बहाना भी नहीं कर सकता कि मैंने तो पूरी तैयारी करी थी बहना तू ही तेरे ससुराल से नहीं आई क्योंकि ऑनलाइन के इतने ऑप्शन है जिसकी कोई हद्द नहीं है। त्यौहार मनाने के तरीके हमारे बदल गये। हम लैपटॉप की स्क्रीन पर त्यौहार मना लेते

हैं या सोशल मीडिया साइट पर अपने स्टेटस में या स्टोरी में अपलोडिंग करके अपने त्यौहार मनाकर बधाई दे देते हैं।

शिशुपाल वध के समय अपनी ही सुदर्शन से अपनी ही तर्जनी चोटिल करा बैठे कृष्ण को जब द्रौपदी ने आँचल चीरकर पट्टी बांधी थी, तब योगेश्वर ने मन ही मन प्रण लिया था कि समय आने पर इस वस्त्र के एक-एक धागे का ऋण चुका दूंगा। लेकिन आज सगी बहन या भाई से ही जलन है। और जलन किस बात की? स्टेटस की, पैसे की, रुपये की, लाखों के पैकेज की, या कोई भारत में है और कोई विदेश जाकर के सेटल हो गया है उसकी। और विदेश जाने के बाद भी एक चीज़ नहीं बदली कि मामा में कंस और शकुनि का ही रूप दिखाई देता है।

समाज में एक बात यह समझ में नहीं आती कि जो भाई-बहन बचपन से लड़ते-लड़ते बड़े होते हैं शादी के बाद वही भाई अपनी बहन की मसखरी करता है या उसे चिढ़ाता है तो उसे बहन को ऐसा क्यों लगता है कि भैया को भाभी भड़का रही है! मज़े की बात तो यह है कि भाई जब कुँआरा होता है तो उसकी शादी के लिए उत्सुक जितनी उसकी बहन होती है, उतना ख़ुद वह लड़का नहीं होता। पर पता नहीं शादी होते ही क्या हो जाता है! वैसे भी संसार का तो मैं नहीं जानता, लेकिन भारत में कोई भी नारी अपने पति की बहन यानी, ननद से प्यार नहीं कर सकती। हाँ अगर आप बात पतियों की कर रहे हैं तो फिर और बात है।

रक्षाबंधन का मूल भाव तो रक्षा सूत्र ही है कि जिसकी कलाई पर यह बंधे, वह बांधनेवाले को रक्षा का वचन देता है और बांधनेवाला भगवान से प्रार्थना करता है कि इस रक्षा सूत्र से सामनेवाले की रक्षा हो, उसे आरोग्य मिले, ऐश्वर्य मिले, कीर्ति मिले, यश मिले और हर क्षेत्र में वह अभय प्राप्त करे। मुझसे एक ने पूछा कि कविवर क्या लड़के लड़के या लड़की लड़की आपस में एक दूसरे को राखी बांध सकती हैं? मैंने कहा भाई ऐसे तो शादी भी केवल लड़का लड़की की ही होती थी लेकिन आज तो...!

मैं अपनी मर्यादा जानता हूँ, लेकिन पौराणिक दृष्टि से देखा जाए तो पहला रक्षा सूत्र लड़के ने लड़के को ही बांधा था और कथा तो ऐसी भी आती है जब इंद्र किसी युद्ध के लिए गये तो उनकी पत्नी ने भी उनको रक्षासूत्र बांधा था। इस कामना के साथ में कि इंद्र उस युद्ध में विजयी

हों। ब्राह्मण भी मंत्र पढ़ते हुए जब किसी पूजन में तिलक के बाद जजमान की कलाई पर रक्षासूत्र बांधते हैं, तो मंत्र बोलते हैं- 'येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः तेन त्वाम् रक्ष बंधनामी रक्षे माचाल माचाल।' यानी जिस रक्षासूत्र से दानवों के राजा बलि बंधे थे, उसी बंधन से मैं तुम्हें बांधता हूँ और तुम अपने धर्म को निभाओगे।

आशा करता हूँ कि आप भी अपना पाठक धर्म निभाएंगे और इस लेख को सराहेंगे और खो जाएंगे उस ज़माने में जब राखी पर यह गीत बजा करता था- 'फूलों का तारों का सबका कहना है, एक हज़ारों में मेरी बहना है।' **हिमांशु बवंडर**

रास्ते में पड़ता
घर बहन का
पर गुज़र जाते
अक्सर उधर से
इसी तरह
चुपचाप
मिले बिना
बग़ैर ख़बर किए

अपना
या दुनिया का
कोई काम देखते

बहनें
हमारे रास्ते में
नहीं आतीं...!

प्रेमरंजन अनिमेष

KAVIGRAM

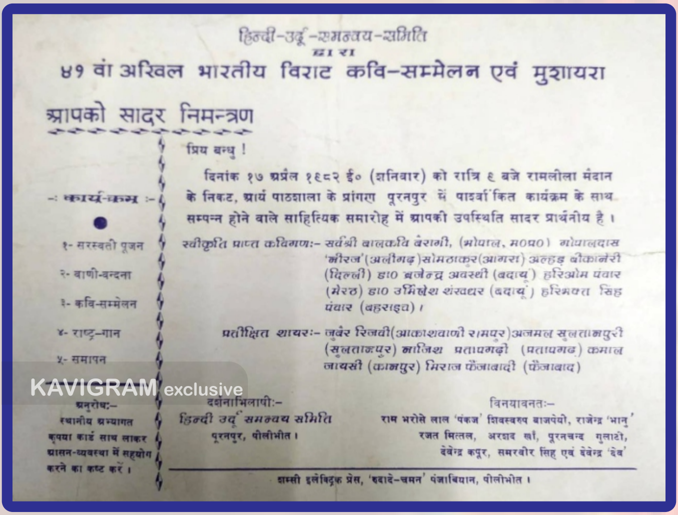

हिन्दी-उर्दू-समन्वय-समिति
द्वारा
४१ वां अखिल भारतीय विराट कवि-सम्मेलन एवं मुशायरा

आपको सादर निमन्त्रण

-: कार्य-क्रम :-

१- सरस्वती पूजन
२- वाणी-वन्दना
३- कवि-सम्मेलन
४- राष्ट्र-गान
५- समापन

प्रिय बन्धु !

दिनांक १७ अप्रैल १९८२ ई० (शनिवार) को रात्रि ९ बजे रामलीला मैदान के निकट, आर्य पाठशाला के प्रांगण पूरनपुर में पार्श्वांकित कार्यक्रम के साथ सम्पन्न होने वाले साहित्यिक समारोह में आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

स्वीकृति प्राप्त कविगण:- सर्वश्री बालकवि बैरागी, (भोपाल, म०प्र०) गोपालदास 'नीरज' (अलीगढ़) सोमठाकुर (आगरा) अल्हड़ बीकानेरी (दिल्ली) डा० ब्रजेन्द्र अवस्थी (बदायूं) हरिओम पंवार (मेरठ) डा० उर्मिलेश शंखधर (बदायूं) हरिभक्त सिंह पंवार (बहराइच)।

प्रतीक्षित शायर:- जुबैर रिजवी (आकाशवाणी रामपुर) अजमल सुलतानपुरी (सुलतानपुर) नाजिश प्रतापगढ़ी (प्रतापगढ) कमाल जायसी (कानपुर) मिराज फैंजाबादी (फैंजाबाद)

KAVIGRAM exclusive

अनुरोध:-
स्थानीय अभ्यागत कृपया कार्ड साथ लाकर आसन-व्यवस्था में सहयोग करने का कष्ट करें।

दर्शनाभिलाषी:-
हिन्दी उर्दू समन्वय समिति
पूरनपुर, पीलीभीत।

विनयावनतः-
राम भरोसे लाल 'पंकज' शिवस्वरुप बाजपेयी, राजेन्द्र 'भानु' रजत मित्तल, अरशद खाँ, पूरनचन्द गुलाटी, देवेन्द्र कपूर, समरवीर सिंह एवं देवेन्द्र 'देव'

शम्सी इलेक्ट्रिक प्रेस, 'इदादे-चमन' पंजाबियान, पीलीभीत।

वर्ष 1982 के एक कवि-सम्मेलन का एक पत्रक
जिससे पता चलता है कि उस समय कवि-सम्मेलन के लिए सरस्वती वन्दना से लेकर राष्ट्रगान तक सब कुछ पूर्वनिर्धारित और आवश्यक होता था।
चित्र सौजन्य: श्री अल्हड़ बीकानेरी परिवार

कवि-सम्मेलन संग्रहालय में कवि-सम्मेलन के पुराने चित्र, निमन्त्रण पत्र, चिट्ठियाँ, कतरनें तथा अन्य दस्तावेजों को संग्रहीत करने का कार्य प्रगति पर है। दाहिनी ओर दिये गये लिंक पर स्पर्श करके आप इस खण्ड के अन्य चित्र देख सकते हैं

कवि सम्मेलन संग्रहालय

पुस्पक चीलगाड़ी और पुष्पक

प्रो. अशोक चक्रधर

भाग 9

चीज़ों को अगर एक-दूसरे से जोड़ना शुरू करो तो पता नहीं कहाँ से वे तर्क जुट जाते हैं, जिनसे आकस्मिकरूपेण परस्पर संबद्धता बनती चली जाती है।

अभी उड़ीसा के मयूरभंज क्षेत्र की हमारी नवनिर्वाचित राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का, पूरे देश ने हृदय से स्वागत किया। जिस दिन वे राष्ट्रपति निर्वाचित हुईं, उस दिन कवि मधुप मोहता ने एक बधाई संदेश लिखा। व्हाट्सऐप पर वह संदेश फ़ॉरवर्डित होकर मेरे पास बारम्बार आता रहा, 'भारत के राष्ट्रपति पद पर भगवान जगन्नाथ की साधिका व राघवेंद्र राम सरकार को ध्येय-पथ सुझानेवाली हमारी माँ शबरी की वंशबेलि, आदरणीया बड़ी बहन श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के निर्वाचन पर हार्दिक बधाई। श्रद्धेय राजेंद्र बाबू, डॉ राधाकृष्णन जी व अभूतपूर्व कलाम साहब की तपस्या-जनित सुगंध से सुवासित भारतीय गणतंत्र के राज-उपवन को यह पवित्र वनफूल मंगलकारी हो'। (उद्धृत, व्हाट्सऐप ग्रुप 'मंच के सारथी')

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू महामहिम राष्ट्रपति होने के कारण भारत का प्रथम व्यक्तित्व हैं और भारत की प्रथम महिला भी।

भारत की एक प्रथम महिला मुझे जुलाई उन्नीस सौ सतासी में मॉस्को में मिली थीं, जिन्होंने पहली बार लिफ्ट का नामकरण मेरे सामने ही कर दिया था, 'पुस्पक चीलगाड़ी'। वे शब्द-निर्मात्री थीं और देखिए, इतने बरस बाद हमारे भारत की प्रथम महिला, हमारी देश-निर्मात्री राष्ट्रपति ने मयूरभंज क्षेत्र के साठ लोगों को राष्ट्रपति भवन में दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया। राष्ट्रपति भवन में आतिथ्य के समय वे

अपने सिर पर पारम्परिक आदिवासी मयूरभंज नृत्य का मुकुट लगाए हुए थीं। श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के पुराने समय के साथियों ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि उन्हें राष्ट्रपति भवन से भोजन का न्यौता मिलेगा। बहरहाल, राष्ट्रपति भवन उस दिन मयूरभंज के 'जय जोहार' अभिवादन-संबोधनों से गूंज गया। देखिए, चीज़ें जुड़ रही हैं ना एक-दूसरे से। अब आगे चलते हैं। आगे नहीं पीछे, सन् 1986 की ओर।

सन छियासी में दिल्ली में 'अपना उत्सव' हुआ था। तब ग्रामीण एवं आदिवासी अंचलों के लगभग दो हज़ार लोक-नर्तक, देश के विभिन्न भागों से दिल्ली आए थे। उनमें छऊ नर्तक-नर्तकी भी थे। छऊ नृत्य होता है तीन प्रकार का- उड़ीसा का मयूरभंज छऊ, बिहार का सरायकेला छऊ (अब झारखंड में), और पश्चिम बंगाल का पुरलिया छऊ। छऊ नृत्य की इन तीनों शैलियों की तीन टीमें 'अपना उत्सव' में आई थीं। तीनों में प्रतिद्वंद्विता रहती थी। सरायकेला पहले राजशाही वाले 'उड़िया सरायकेला स्टेट' में था, जहाँ खनिज सम्पदा और भू विस्तार में कोई कमी नहीं थी। आज़ादी के बाद भी कुछ समय तक यहाँ राजतंत्र चलता था। प्रारम्भ में सरदार पटेल 'उड़िया सरायकेला स्टेट' को एक स्वतंत्र स्टेट का दर्जा दिलाने को सहमत हो रहे थे, लेकिन कुछ ही समय बाद उसे बिहार में मिला दिया गया। उड़िया की छऊ नृत्य-कला भी बिहार के हिस्से में आ गई और अब अंततः झारखंड को मिल गई। इस प्रक्रिया में छऊ नृत्य थोड़ा बिखर गया।

तीनों शैलियों के गुरु अलग थे। उनकी नृत्य-पद्धतियाँ कुछ-कुछ भिन्न थीं। जैसे, सरायकेला और पुरलिया शैलियों में सारे नर्तक, मुखौटा लगाकर नृत्य करते थे। मुखौटा लगाने की परम्परा में दो सुविधाएँ थीं, एक तो यह कि बड़ी उम्र के नृत्यकार भी मुख्य प्रस्तुति का अंग बन पाते थे और दूसरी यह कि मुखौटों की ओट में पुरुषों को स्त्रियों की भूमिका में अंगीकार कर लिया जाता था। बिहार सरायकेला वाले अपने नृत्य को प्राचीनतम और मौलिक मानते थे। अपने नृत्य में वे प्रायः युद्ध-कौशल भंगिमाएँ दिखाते थे। एक हाथ में ढाल रहती थी, दूसरे में तलवार। यौद्धिक एक्रोबैटिक उछल-कूद चित्ताकर्षक होती थी। उनके पौराणिक महिला-चरित्र बने हुए पुरुष रौद्र रूप का निदर्शन करते थे। अधिकांश नृत्यों में वे महिषासुरमर्दिनी देवी दुर्गा का रूप धारण करते थे। ढोल, मृदंग, धमसा, शहनाई और तबला आदि सारे संगीत-वाद्य पुरुष बजाते थे।

मयूरभंज छऊ नृत्य के गुरुओं ने एक युगांतरकारी कार्य किया कि अपने नर्तकों के चेहरों से मुखौटे हटा दिए। नृत्य से मुखौटे हटाकर पुरुषों का आधिपत्य न केवल कम कर दिया, बल्कि रौद्र और वीर रस के साथ शृंगार और भक्ति को भी जोड़ दिया। मुखौटा-मजबूरी नहीं रही तो छऊ में स्त्रियों को भी आदरपूर्वक प्रवेश मिला। कह सकते हैं कि मयूरभंज के छऊ ने उड़ीसा की सारी स्त्रियों में एक नई सांस्कृतिक चेतना का संचार कर दिया। युवतियाँ न केवल सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगीं, उनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता आई। हमारी राष्ट्रपति अपने आदिवासी अंचल की पहली महिला हैं, जिन्होंने भुवनेश्वर जाकर स्नातक शिक्षा पूरी की है। विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि ग़रीबी और विषमताओं से जूझने के लिए उन्होंने अपने अंचल में 'मयूरभंज छऊ' से भी प्रेरणा पाई होगी। आपको यह भी बताता चलूँ कि उड़ीसा राज्य के हर ज़िले में में चैत्र मास के पूरे तीस दिन तक छऊ महोत्सव चलता है।

सोवियत संघ के भारत महोत्सव के लिए उन्नीस सौ सतासी में जब देश की विभिन्न लोकनर्तक-मंडलियों का चयन हो रहा था, तब दूरदर्शन की ओर से मैं भी चयन-प्रक्रिया का एक अंग था। तब तक कोई संस्कृति मंत्रालय नहीं था। गृह-मंत्रालय के अंतर्गत एक संस्कृति विभाग होता था, उसी के ऊपर कलाकार-चयन की ज़िम्मेदारी थी। छऊ नृत्य की तीनों शैलियों से एक-एक टीम ऑडीशन के लिए आई थी। चयन करना था केवल एक टीम का। बातचीत के दौरान तीनों टोलीनायकों का विचित्र-सा व्यवहार सामने आया, 'अगर हम सब नहीं जा सकते तो कोई भी नहीं जाएगा'। बड़ा ही सौम्य लेकिन अड़ियल-सड़ियल रवैया था। दशरथ पटेल झुंझला रहे थे, 'बहुत समय लग रहा है। दूसरी डांस-फ़ॉर्म्स में से चुनिए, इन्हें बाद में देखेंगे'।

एक साल पहले हुए 'अपना उत्सव' का मुख्य एंकर होने के नाते मैं उनमें से कई छऊ नर्तकों को पहले से जानता था, पर इस बात को चयन-मंडल का कोई सदस्य नहीं जानता था। टी -ब्रेक में नेपथ्य में जाकर मैंने इनसे सद्भाव-मुलाक़ात की और बड़ी चतुराई से उन्हें एक रास्ता सुझाया, 'देखिए, तीनों नहीं जाएंगी, जाएगी तो एक ही टीम, लेकिन अगर आप तीनों अड़े रहे तो हो सकता है कि ये लोग छऊ को ही छोड़ जाएँ। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हर टोली से पाँच-पाँच नर्तक लेकर एक नई टीम बना ली जाए। नई टीम में तीनों टोलीनायक

जाएंगे, यदि वे नृत्य कर सकते हैं। सोच-विचार कर बता दीजिएगा।'

तरक़ीब काम कर गई। नाऊ ओवर टू मॉस्को...

मीटिंग से पहले मैं कोमल जी. बी. सिंह से मिलना चाहता था, लेकिन पता नहीं था कि वे किस कमरे में हैं। दूरदर्शन पर उद्घाटन समारोह का 'आँखों देखा हाल' सुनाने के लिए हम चार लोग मॉस्को आए थे। मुझे और कोमल जी. बी. सिंह को 'भारत महोत्सव' के सांस्कृतिक पक्ष पर और राजीव मेहरोत्रा और विनोद दुआ को राजनयिक घटनाक्रम और अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों पर बोलना था। विनोद दुआ और मैं हिन्दी के लिए थे, कोमल और राजीव अंग्रेज़ी के लिए।

विनोद को कमरे में छोड़कर मैं लिफ्ट की ओर बढ़ा। लिफ्ट काफ़ी बड़ी थी। इतनी बड़ी जैसे एलआईजी फ़्लैट का कोई कमरा हो। वह लिफ़्ट बिहार की युवा छऊ नर्तकियों और मध्यप्रदेश की उराँव लोक नृत्यांगनाओं के हँसी-ठट्ठे से गुंजायमान थी। इतनी बड़ी लिफ्ट में सवारी करने का उनका कौतुक भरा अनुभव, उल्लास की ध्वनियों में तब्दील हो रहा था। मुझे 'भारत महोत्सव स्वागत कक्ष' के लिए नीचे जाना था और वो ऊपर का बटन दबा रही थीं। उनकी बातचीत से मुझे अहसास हुआ कि वे काफी देर से उस लिफ्ट में ऊपर-नीचे आ-जा रही हैं। किसी भी फ्लोर पर एक साथ निकलती हैं और एक मंज़िल सीढ़ियों से ऊपर जाती हैं या नीचे जाती हैं और फिर से लिफ्ट में चढ़ जाती हैं। लिफ्ट में दस पन्द्रह ग्राम्य-आदिवासी बालाओं के बीच, मैं अकेला मूढ़, किंकर्तव्यविमूढ़ था। दो बार ऊपर-नीचे आ-जा चुका था। संख्याएँ रूसी में लिखी होने के कारण वे हर बार कोई ग़लत बटन दबा देती थीं। लिफ्ट को एक आदिवासी छऊ नर्तकी ने जो नाम दिया, वह उनकी 'फेनूगिलासी' हँसी के साथ, मेरे कानों में अभी भी गूंजता है- 'पुस्पक चीलगाड़ी'। यही भारत की वह प्रथम वह शब्द-निर्मात्री महिला थी, जिसने मॉस्को में पहली बार लिफ्ट का नामकरण किया था 'पुस्पक चील गाड़ी'। मुझे उसका नाम उसका नहीं मालूम पर यह मालूम है कि वह एक मौलिक नामकरण विशेषज्ञ थीं। मैंने बालाओं के हाथ जोड़े और संख्याबोधहीनता में सबसे नीचेवाला बटन दबा दिया। दुर्भाग्य कि ग्राउंड फ्लोर पर नहीं पहुँच पाए, तलहटी में पता नहीं कहाँ पहुँच गए। भला हो एक रूसी युवक का जिसने लिफ़्ट में घुसते ही हमारी समस्या भाँप ली और कोई उचित बटन दबा दिया। दरवाज़ा खुला तो मुझे ग्राउंड फ्लोर नज़र आया। मैं देहाती कपड़ों की कच्ची-

पक्की, औंधी-सौंधी, दिव्य-असह्य नारी महक के दिल-खैंचू और मर्म-घोंटू सघन वातावरण से बाहर निकल आया। बालाएँ 'पुस्पक चीलगाड़ी' को लेकर उड़ गईं।

कोमल मीटिंग में ही मिलीं। चर्चा का केन्द्रीय विषय यही कि तीन जुलाई को लेनिन स्टेडियम में 'भारत महोत्सव' का भव्य उद्घाटन होना है। भारत से आए सभी लोक कलाकारों, शास्त्रीय संगीतकारों, खिलाड़ियों की भव्य प्रस्तुति को कैसे कवर किया जाए। अभी उसमें चार-पाँच दिन बाकी थे। तकनीकी रणनीतियाँ बन रही थीं। मॉस्को टेलिविज़न के कितने कैमरे कहाँ-कहाँ होंगे और हमारे कहाँ-कहाँ। विषय-वस्तु और तकनीक दोनों ही मामलों में राजीव मेहरोत्रा शर्मा जी के मुख्य सलाहकार थे। सारी चर्चाएँ अंग्रेज़ी में चल रही थीं। हिन्दी उद्घोषक विनोद दुआ भी इक्का-दुक्का सलाह अंग्रेज़ी में ही दे रहे थे। अपन ने जो कहा सो हिन्दी में कहा। प्रारंभ में तो सब हल्की-सी हिक़ारत से देखते थे, पर अपनी बात में भी चूँकि दम होता था इसलिए सम्मान बरकरार रहता था। हमारे दूरदर्शन दल में हिन्दी सभी जानते थे। अपनी हिन्दी ऐसी होती थी जिसमें गहन-गूढ़ तकनीकी बातें भी समझाई जा सकें। शिव शर्मा जी ने मेरी हिंदी को प्रोत्साहित किया। थोड़ी चुस्कियाँ चलीं तो सब हिन्दी बोलने लगे।

मैं कमरे में आकर जुट गया अपनी सामग्री का काव्यांतरण करने में। चाहता था, ऐसी कॉमेंट्री करूँ कि कविता जैसी लगे। कोमल जी. बी. सिंह को बताता था, वे बड़ी खुश होती थीं। मेरी कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद कर लेती थीं और कई बार वे नई-नई सूचनाएँ लेकर आती थीं, मैं उनका हिन्दी अनुवाद कर लेता था। एक बहुत अच्छा कामकाजी सम्बंध कोमल जी. बी. सिंह के साथ बना।

ऐसा अपेक्षित तादात्म्य वहाँ अपने साथी विनोद दुआ के साथ नहीं हो पाया। वे दूरदर्शन पर प्रसारण का ज़्यादा अनुभव रखते थे, शायद इसलिए होमवर्क में उनका ज़्यादा भरोसा नहीं था। अच्छी बात थी कि आनंद मनाने के मूड में रहते थे। कुछ पैसा भारत से लेकर आए थे, रोज़ाना का भत्ता भी रूबलों में काफी मिलता था। वे बाज़ार जाते थे और नई-नई चीज़ें खरीदकर लाते थे। आपको जानकर हैरानी होगी कि जिन दिनों एक डॉलर बीस रुपये में आता था उन दिनों एक रूबल में दो डॉलर आते थे। आज जिस रूबल की हालत इतनी खस्ता है वह उन दिनों बड़ा पुख्ता और रौबदार हुआ करता था।

विनोद ने वैलवेट से बना हुआ एक शानदार डिब्बा खोलकर दिखाया, उसमें से निकला एक दमकता हुआ क्लारनेट। मैं दंग रह गया। कितना महंगा होगा! मेरे मन में उनकी इज़्ज़त भी बढ़ गई और ईर्ष्या सी भी हुई। पैसा खर्च करो तो इस तरह करो। मुझे भी घूमना चाहिए। स्नेहा और अनुराग के लिए चीज़ें ख़रीदनी चाहिए। रूबल तो मेरे पास भी ख़ूब सारे हैं। यहाँ ख़ामख़ां लगा हुआ हूँ अपनी कॉमेंट्री को बेहतर बनाने में, और सूचनाओं को इकट्ठा करने में।

कमरा क्लारनेट से गूंजने लगा। उन्हें बजाना नहीं आता था फिर भी ध्वनियाँ अच्छी लग रही थीं। अचानक क्लारनेट पलंग पर रखते हुए उन्होंने मुझसे ऐसी बात कही जो मुझे कुछ अजीब-सी लगीं। पर मैं मानता हूँ कि उन्होंने तो सद्भावना में ही कही होगी- 'अशोक! यू शुड स्पीक इन इंग्लिश इन द मीटिंग्ज़। विदाउट इंग्लिश यू कांट सर्वाइव इन दिस प्रोफेशन। आइ मेड माइ सैल्फ फ्लूयेंट इन इंग्लिश। दो माइ एंटायर वर्क इन मीडिया इज़ इन हिन्दी'। मैंने क्या कहा होगा, नहीं जानता, पर मन की मौन भाषा कह रही थी- 'अपनी भाषा पर रूसियों की तरह क्या प्रेम नहीं कर सकते हम? क्या हमें सोवियत संघ के लोगों को ये बात नहीं बतानी चाहिए कि हमें भी आपकी तरह अपनी भाषा से प्रेम है'।

विनोद दुआ का क्लारनेट पलंग पर लेटा-लेटा मेरी बात का समर्थन कर रहा था। ऐसा मुझे लगा। फिर लगा जैसे 'पुस्पक चीलगाड़ी' पर मेरे साथ हिंदी और उसकी सहोदरा भाषाएँ सवार हैं और अपनी-अपनी भाषाओं में खिलखिला रही हैं। 'पुस्पक चीलगाड़ी' को पता नहीं चल रहा कि वे ऊपर जा रही हैं या नीचे।

फ़र्स्ट अगस्त टू थाउज़ेंट ट्वेंटी टू। ओवर टू कविग्राम दिल्ली...

राष्ट्रपति भवन में पुष्पक हैलिकॉप्टर तैयार है, महामहिम की सेवा में!

अशोक चक्रधर

भाई की भुजाओं के शौर्य पर भरोसा है
सरहदों पे बहनों की राखियाँ बताती हैं

डॉ. कीर्ति काले

प्रिय पाठको!

आपके सहयोग तथा विश्वास से कविग्राम अनवरत विकास की ओर अग्रसर है। पुराने कवि-सम्मेलनों के संग्रह तथा दस्तावेजीकरण से लेकर नये कवि-सम्मेलनों के आयोजन तक सब कुछ हम सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

हाल ही में आयोजित किये गए कविग्राम कवि-सम्मेलन को आपका ख़ूब प्यार मिला तथा डिजिटल मीडिया पर उस कवि-सम्मेलन के आठों कवियों को भरपूर प्रशंसा मिली। हम भविष्य में भी 'कविग्राम कवि सम्मेलन' की शृंखलाएँ आयोजित करते रहेंगे।

कविग्राम पत्रिका प्रतिमाह आपको मिल रही होगी। यदि किसी तकनीकी कारणवश पत्रिका आप तक डिलीवर नहीं हो रही है तो कृपया कविग्राम की वेबसाइट से पत्रिका प्राप्त करने का कष्ट करें।

एक विनम्र अनुरोध यह है कि कविग्राम के व्हाट्सएप नम्बर पर रचनाएँ तथा फॉरवर्डेड संदेश न भेजें क्योंकि इससे हमारा संप्रेषण बाधित होता है। यदि आप रचना भेजना चाहते हैं तो इसके लिए केवल हमारी ई-मेल आईडी का प्रयोग करें।

आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

-संपादक

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)

(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

जो अंक पढ़ना चाहें उसको स्पर्श करें

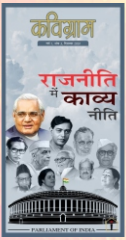

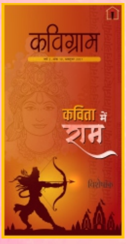

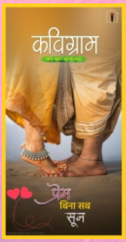

KAVIGRAM.COM

मुखपृष्ठ	फिल्म निर्माण	कविग्राम फेसबुक समूह
प्रकाशन	कविग्राम पत्रिका	कविग्राम फेसबुक पेज
काव्यलोक	कवि-सम्मेलन बुकिंग	कविग्राम ट्विटर
समाचार लोक	कवि-सम्मेलन संग्रहालय	कविग्राम इंस्टाग्राम
पुराने चावल	सम्पर्क	कविग्राम यू-ट्यूब